चौथा अध्याय : ' भँवर ' नाटक की मनोवैज्ञानिकता

विषय प्रवेश, प्रतिभा के चरित्र में मनोवैज्ञानिकता, प्रो. ज्ञान, जगन, हरदत्त, निष्कर्ष ।

विषय प्रवेश :

आज का युग मनोविज्ञान के प्रति विशेष आस्थावान है । मानव जीवन के शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक विकास आदि के क्षेत्रों में भी मनोविज्ञान की उपादेयता स्वीकार कर ली गई है । काव्य और कला का जन्म मानव मन के अंतस्थल में ही होता है, इसलिए इनकी प्रवृत्तियों से परिचित होने के लिए मानव-मन के रहस्यमय व्यापार पर प्रकाश डालना आवश्यक हो जाता है । मनोविश्लेषण संबंधी नये तत्वज्ञान ने साहित्य के मूल में स्थित मानस प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए यह सिध्द् कर दिया है, कि काव्य अपनी प्रत्येक दशा में मानव-मन की ही अभिव्यक्ति हैं । इस संसार से संपन्न होने वाले समस्त व्यापारों का मूल आधार मानवीय हृदय तथा मस्तिष्क हैं । मानव व्यक्तित्व का आन्तरिक पक्ष उसकी कर्मण्यता को दिशा-निर्देश प्रदान करता हैं । समस्त शारीरिक अनुभावों का कारण कोई न कोई मानसिक संकल्प-विकल्प अथवा राग-विराग जन्य भावात्मक स्थिति होती हैं । काव्य का विषय बाह्य घटना के मूल में पैठकर उसके मानसिक कारणों की व्याख्या तथा उसके कारण उत्पन्न होने वाली शारीरिक क्रियाओं एवं मानसिक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना होता हैं ।

" मानव की मानव के हृदय से परिचय प्राप्त करने की चेष्टा, मानस-व्यापार एवं तज्जन्य विविध आचरण, क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं के मूल रहस्य को ज्ञात करने का प्रयास ही मनोविज्ञान हैं । "[1] इसके मूल में जिज्ञासा की मूल प्रवृत्ति कार्य करती है । इसके जरिए से मानव खुद को समझने का प्रयास करता हैं । कवि की चेतना आत्मोपलब्धि के स्तर पर क्रियाशील होती है और उसकी आत्मप्रकाशन की सहज मनोवृत्ति उसे आत्माभिव्यंजन की दिशा में प्रेरित करती हैं । सभ्यता और संस्कृति के आगे बढते हुए चरणों ने उसे आत्माभिव्यक्ति की सुविधा अनुकूल एवं उपयुक्त माध्यम के रूप में प्रदान की हैं ।

साहित्यकारों ने अपने कृतियों में मनोविज्ञान की सहायता लेकर कृतियों को

---

1) डा. शैलबाला अग्निहोत्री - सूर साहित्य का मनोवैज्ञानिक विवेचन पृ.सं. 16

अधिक सरस, सुंदर , रोचक, आकर्षक एवं अनुभूतिगम्य बनाने का प्रयत्न किया है । मनोवैज्ञानिक का प्रयोग साहित्य में इसलिए हो रहा है कि साहित्य जीवन के अधिक-से-अधिक निकट आ सके । यह काम मनोविज्ञान पूरी जिम्मेदारी के साथ निभा रहा है । यह शास्त्र मानव में छिपे हुए पहलुओं को प्रकाश में लाता हैं । मानव के सही स्वभाव का प्रतिबिंब हमें आज साहित्य के माध्यम से झलकता दिखाई दे रहा हैं । नाटककार अपने पात्रों के अन्तर्मन में प्रवेश कर उसके साथ तादात्म होकर गहराई में छिपे भावनाओं को व्यक्त करता हैं । जिसके कारण वह पात्र एक मनोवैज्ञानिक आदर लेकर कृति में प्रविष्ट होता हैं ।

मनोविज्ञान एक साधना है, जिसके द्वारा प्रत्येक प्राप्त ज्ञान, आनंद में पर्यवसित होकर ही जीवन को सफल बना सकता है । जिस प्रकार शरीर विज्ञान की प्रयोग शाला में की गयी मानवीय अंगो की चीर-फाड, मानव को रोग-मुक्तकर स्वस्थ जीवन का आनंद प्रदान करने के उद्‌देश्य से की जानेवाली साधनामात्र हैं, साध्य तो वह सुख है जिसकी प्राप्ति के लिए वह श्रम-साध्य विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता हैं, उसी प्रकार मनोविकार संबंधी मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक अध्ययन साहित्य के क्षेत्र में आकर जीवन की अनेकानेक अभिव्यक्तियों को प्रकाशित करने में सहाय्यक बनकर रसानुभूति जन्य लोकोत्तर आनंद की सृष्टि का मूल आधार बन जाता हैं । " साहित्य और काल का काम ही है प्रकाश करना, इसलिए तथ्य के पात्र को अक्षय करके मानव मन को सत्य का स्वाद देना ही उसका मुख्य काम हैं । "[2] उसके साथ ही साहित्य का यह कर्तव्य भी है मनोविज्ञान की अनिवार्यता और असंदिग्ध उपयोगिता के कारण मानव के गहन-जाल-जटिल मन की अगाध रहस्यमयता के भीतर डूबकर जीवन के मूल संचालक तत्वों की छान-बीन और खोज करके उस समस्याओं को रसात्मक रुप में सामने रखना और सुलझाव के सुझाव भी अपने दृष्टिकोण से देना साहित्य का फर्ज है । ' भँवर ' नाटक में

अश्क जी ने प्रतिभा की समस्याओं को सुलझाने के लिए हरदत्त के माध्यम से सुझाव भी दिया है ।

---

2) डा.उर्वशी सुरती - आधुनिक हिंदी कविता में मनोविज्ञान पृ.सं. 53

प्रतिभा के चरित्र में मनोवैज्ञानिकता :-

प्रथम दृश्य में पर्दा उठते ही हमें प्रतिभा अत्यन्त शिथिल तथा अन्यमनस्क-सी दिखाई देती हैं । शून्य दृष्टि से छत की ओर देखती, थकी-सी अँगडाई लेती, दुनिया से और अपने आप से बेजार प्रतिभा कहती हैं।--- "(अँगडाई लेते हुए) ओह ..... ओ । कितना बडा शून्य है यह जीवन ।। कहीं भी तो कोई ऐसी चीज नहीं जो ठोस हो, जिसका सहारा लिया जा सके ।" [3] और वह खीझ उठती है । उसे न तो साधारण जीवन अच्छा लगता है न पापा-ममी का कामों में उलझा रहना, बहनों का या सहेलियों का उसे बनाव-शृंगार अच्छा लगता है न फिल्मी गीत । उसे सब कुछ वितृष्णाजनक लगता है । इस वितृष्णा का मूल कारण है प्रो. नीलाभ के प्रति असफल प्रेम निवेदन । उसकी इस भंगिमा को देखने के बाद ऐसा लगता है कि प्रो. नीलाभ पर वह जी-जान से प्यार करती थी, लेकिन ऐसा करनेवाला व्यक्ति मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसी तरह का होता है । एक तो यह करता है जिसपर प्रेम किया है और वह सफल नही हुआ तो उसे वह इस दुनिया से ही उठता है या उसके पीछे जीवन की सारी तन्मयता खोकर उसका अनुकरण करता है या हर समय अपने प्रिय व्यक्ति के स्वप्नों में खोया रहता है । इसीकारण उसमें दुनिया से नफरत की भावना निर्माण हो जाती है । इसप्रकार ही प्रतिभा में भी निराशा, उक्ताहट, घुटन और अन्यमनस्कता भर गई है ।

प्रो. नीलाभ स्वंय तीव्र रागात्मक असंतोष के शिकार है । अपने अध्यापक जीवन में एक छात्रा से शादी करके कटु अनुभवों के कारण वे सामान्य जीवन से ही विरक्त हो गये थे । तब से उन्होंने अपना सारा जीवन अध्ययन और अध्यापन के लिए समर्पित कर दिया था । यही जीवन के प्रति विरक्ति प्रतिभा के लिए आसक्ति बन जाती है । इस बात में यह तथ्य है कि विरक्ति ही आसक्ति के लिए चारे का काम करती है । लेकिन उस प्रेम में व्यक्ति के लिए सफलता नहीं मिलती है, तो वह व्यक्ति उस ओर से मुँह मोड लेता है, और द्विगुणे वेग से दूसरे व्यक्ति से प्रेम करता है । पर उसके मन में प्रथम प्रेम के असफलता की ग्रंथि बनो होती है और इसलिए वह दूसरे व्यक्ति के साथ अपना जीवन नहीं निभा सकता । प्रतिभा भो

---

3) अश्क भँवर पृ.सं. 53

यही करती है, कि प्रथम प्रेम में असफल होने के बाद वह टेनिस-प्रेमी सहपाठी सुरेश से विवाह कर लेती है लेकिन उसके मन में प्रथम प्रेम के असफलता की ग्रथि बन चुकी है । यह निराशा ग्रथि उसे बार-बार झकझोरकर साधारण जीवन से भाग-निकलने के लिए विवश कर देती हैं ।

" प्रतिभा ने प्रो. नीलाभ के व्यक्तित्व का आत्मीकरण करते हुए अपने व्यक्तित्व में बौध्दिकता का भी आरोपण कर लिया हैं । आत्मीकरण एक ऐसी रोचक मानसिक प्रतिक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने-आपको अपने आचरण और क्रियाओं को, किसी अन्य या प्रिय व्यक्ति के अनुसार बना लेता हैं । ऐसा तब होता हैं, कि हम किसी अत्यन्त प्रभावशाली और प्रिय व्यक्तित्व वाले के निकट सम्पर्क में आ जाते है । हमारा पहला संपर्क संवेगात्मक होता है, लेकिन वह इतना सबल हो जाता है कि आचरण की अनुरुपता, चेतना या अचेतन अनुकरण द्वारा अनिवार्य हो जाती है और इसके गुण-दोषों को हम पूरी तरह से अंगीकार कर लेते है । "[4] इसतरह ही प्रतिभा पर प्रो. नीलाभ के व्यक्तित्व का प्रभाव पडा है । प्रो. नीलाभ के हर कार्य-कलाप की प्रतिभा पर स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है । प्रो. नीलाभ की तरह बौध्दिकता का आचरण और वैसी ही सामान्य जीवन के प्रति विरक्ति, वही सबीको अपनी ओर खिंचना आदि । क्या पता की प्रो. नीलाभ के असफल वैवाहिक जीवन का प्रभाव प्रतिभा पर भी पडा हो । क्योंकि आत्मीकरण करने वाला व्यक्ति अपने प्रभावी व्यक्तित्व वाले का अंधानुकरण करता जाता है इसलिए यह बात टाली नहीं जा सकती कि प्रतिभा ने प्रो. नीलाभ के असफल वैवाहिक जीवन की नकल न की हो ।

यह एक मनावैज्ञानिक सत्य हैं कि हम प्रभावी व्यक्तित्व वाले या प्रिय व्यक्ति का अनुकरण करते हैं उसके साथ ही उनके गुण-दोषों का आत्मीकरण भी । अगर प्रभावी व्यक्तित्व वाले आदमी के पास बौध्दिकता का अतुल भंडार हैं तो उसका कभी अनुकरण नहीं किया जाता । प्लेटो ने भी कहा है, कि अनुकरण अधूरा होता है क्योंकि वह सत्यपर आधारित नहीं होता । तो अनुकरण करनेवाला व्यक्ति प्रभावी आदमी की तरह बौध्दिकता,

---

4) सुरेंद्र पाल भँवर : एक विवेचनात्मक परिचय पृ.सं. १[illegible]

अध्ययन-अध्यापन का नकाब ओढकर घुमता हैं लेकिन वास्तव में वह बुध्दिवादी नहीं होता । इसीतरह ही प्रतिभा ने प्रो. नीलाभ के व्यक्तित्व का सिर्फ आत्मीकरण और अनुकरण भर कर लिया है वह उसे आत्मसात नहीं कर पायी है । प्रतिभा की बौध्दिकता उसके व्यक्तित्व का अंग न होकर एक खोल है । बाहर से प्रतिभा बुध्दिवादी, गुरु-गंभीर दिखाई देती है लेकिन अन्दर से सामान्य लडकियों की तरह सज-सँवारने की, दूसरों से ईर्ष्या करने की और दूसरों से ईर्ष्या से जलाने की प्रवृत्ति उसमें दिखाई देती है । इसलिए वह अपनी सहेली नीलिमा को पूरी बाहों वाला नये फैशन का ब्लाऊल सिलाने के लिए सहमति नहीं देती उसे तो पुराने ढंग का बिना बाँह का ब्लाऊज सिलवाने के लिए बहका देती हैं और उसकी सहमति के लिए बडे ही रोचक तर्क प्रस्तुत करती है -- " स्लीव्ज नारी की उस दासता का प्रतीक है जब उसे सात पर्दों के अन्दर रखा जाता था । अब जिंदगी आजादी चाहती है । बरसात की ठंडी में सरसराती हवा में स्लीव-लेस ब्लाऊज का आनंद तो .... । " [5] और स्वयं फिर आधुनिकतम रुसी फैशन का पूरी बाहों वाला ब्लाऊज नीलिमा को जलाने के लिए सिलवा लेती हैं और उपरसे यह तर्क देती हैं कि - " एकदम बेपर्दा खूबसूरती से अधखुली-अधछिपी, झीनी-झीनी सुंदरता कहीं ज्यादा मन-मोहक लगती है । " [6] जब उसकी बौध्दिकता इस तडकीली-भडकीले वस्त्रों को देखकर जोर पकडती है तब वह बडे ही उदारता का प्रदर्शन कर नीलिमा को अपनी साडी और ब्लाऊज दे देती है और उसका सूफियाना ब्लाऊज और साडी ले लेती है । पर देने से पहले अपने परवानों को दिखाकर उनकी प्रशांसा पाना चाहती है । इस तरह वह हमेशा प्रशंसकों से घिरी रहती है । हर एक प्रशंसकों को वह अपने में रस लेने के लिए अवसर देती है और जब उसे पूरा जानती है तब उससे दूर भागने का प्रयत्न करती है । प्रतिभा में जहाँ व्यक्तिमात्र के लिए विश्वास कम हुआ वही उसमें निराशा की भावना भी बढती गई ।

---

5) अश्क	भँवर	पृ.सं. 63
6) वही	वही	पृ.सं. 62

प्रतिभा इसी निराशा ग्रंथि के कारण दिवास्वप्न देखने लगी हैं । दिवास्वप्न देखनेवाले आदमी अपनी कल्पना में एक ऐसी झूठी दुनिया का निर्माण कर लेते हैं, जिसमें किसी भी वस्तु का यथार्थ मूल्य नहीं होता । दिवास्वप्न देखनेवाला आदमी अपने ही कल्पना के रंगीन दुनियामें विचरण करता हैं और वास्तविकता से बेखबर रहते हैं । परिणाम स्वरुप उन्हें अपने आस पास की वास्तविक दुनिया इतनी निरस, बेजान और असहाय्यनिय लगती हैं कि उसमें वे अपनी सारी दिलचस्पी खो बैठते हैं । ऐसे लोगों का दाम्पत्य-जीवन कभी सुखी नहीं होतो, क्योंकि वे अपने संगी की इतनी ऊँची , कल्पना किये रहते हैं, कि कोई भी व्यक्ति उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकता । लेकिन ऐसे लोग चुप नहीं बैठते बल्कि हर एक को अपने कसौटी पर कसते-परखते हैं । थोडी देर के लिए उन्हें ऐसा आभास होता हैं , कि-मुझे स्वप्नों का सौदागर मिल गया लेकिन दूसरे ही क्षण उनमें प्रतिक्रिया प्रारंभ हो जाती हैं । और उनकी जीवन नौका फिर भँवर में गोते खाती किसी भी दिशा में बहती चली जाती हैं । दिवास्वप्न देखनेवालों के लिए थोडी समय के लिए भ्रम के कारण उपयुक्त साथीदार मिल गया हैं, ऐसा इसलिए लगता हैं क्योंकि वह उसमें सिर्फ गुण ही देखता हैं । दिवास्वप्न देखनेवाला आदमी अपने साथीदार में दोष भी देखने लगता हैं तब उसमें विश्वास की भावना कम होने लगती हैं और निराशा भावना उसे अन्दर-ही-अन्दर मंथती रहती हैं ।

उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक तथ्य को आधार मानकर हम प्रतिभा के चरित्र को देखते हैं तो हमें स्पष्टता से पत्ता चलता हैं कि प्रतिभा में वह सब गुण समाये हुए हैं । प्रतिभा दिवास्वप्न देखनेवालों में से हैं क्योंकि वह अपनी ही कल्पना की झूठी दुनिया में पड़ी रहती हैं । प्रतिभा को न कोई दुनिया से सरोकार हैं न घर के लोगों से वह अपनी ही दुनिया में खोई रहती हैं । प्रतिभा वास्तविकता का सामना नहीं कर सकती इसलिए वह वास्तविक यथार्थ से अनभिज्ञ रह जाती हैं । परिणाम स्वरुप प्रतिभा को आस-पास की वास्तविक दुनिया इतनी नीरस और बेजान लगती हैं कि-"बेहद छोटा और सँकरा हैं घेरा इनके जीवन का-वह उसी में घूमे जाते हैं-दिन-रातउसी में घूमे जाते हैं -- बाहर निकलने की जरा भी कोशिश नहीं करते ।

कोई कुलाँच नहीं, कोई उड़ान नहीं, उच्च-उत्ताल, उद्दाम जिन्दगी के लिए कोई इच्छा संघर्ष नहीं। ------ दिन-रात की बेकार पें-पें--कहीं मुक्ति नहीं-- इस झूठे, निकम्मे, खोखले जीवन से कहीं मुक्ति नहीं।"[7] इसप्रकार प्रतिभा वास्तविक दुनिया से भागती, खुद का दामन बचाती रहती हैं । उसका दाम्पत्य जीवन भी सुखी नहीं हैं, प्रथम प्रेम में असफल होने के बाद उस खाई को भरने का छोटासा प्रयास वह सुरेश से शादी करके करती हैं । पर उसमें भी वह सफल नहीं हो जाती छह; महीने में ही ऊब जाती हैं । और तब से वह हर एक पुरुष में प्रो.नीलाभ का व्यक्तित्व ढूँढती हैं । अपने संगी के रुपमें वह प्रदीप, नारायण, विश्वा, नगेंद्र, हरदत्त, ज्ञान, जगन, निर्मल आदि न जाने कितने लोगों से अपने पास मँडराने के लिए विवश कर देती हैं । प्रतिभा हर एक को अपने कल्पनिक संगी की कसौटी पर कसती, परखती हैं लेकिन वह उसका दिव्य रुप उसे दिखाई नहीं देता तब वह निराश होकर दूसरे के पीछे लग जाती हैं वहाँ भी निराशा ही हाथ लगती हैं । इस प्रकार प्रतिभा मृगतृष्णा की भाँति हर एक के पीछे भागती हैं पर उसे कहीं भी पानी नहीं मिलता और वह प्यास से तडपती हैं प्रतिभा को मृगमरीचिका की तरह दिखाई देता हैं तब उसमें थोडी देर के लिए शांति की भावना आ जाती हैं । प्रतिभा अपनी सहेली नीलिमा से बातें करते हुए इस भावना को स्पष्ट कर देती हैं--" ज्ञान साहब के साथ कभी ऐसा नहीं लगा की हम खाली हैं अथवा यों ही समय गँवा रहे हैं । उन के दृष्टीकोन, उन के वैल्युज सब से भिन्न हैं । उन्होंने स्वंय प्रो. नीलाभ से शिक्षा पायी हैं और मैं सच कहती हूँ नीली, कभी-कभी मुझे ऐसा लगता हैं कि अन्त को जैसे मैं-----मैं--।"[8] प्रतिभा कहना चाहती हैं अन्त में प्रो.ज्ञान को मैं पति के रुप में स्वीकार कर लूँगी । लेकिन जब प्रो.ज्ञान अपना प्रेम निवेदन करते हैं तब वह अस्वीकार कर देती हैं । प्रो.ज्ञान भी फिल्मी लोगों की तरह ही अपना प्रेम-निवेदन करते हैं । इतने बड़े बुध्दिवादी के लिए यह शोभा नहीं देता ऐसा उसे लगता हैं ।

---

7) अश्क	भँवर	पृ.सं. 57
8) वही	वही	पृ.सं. 66

प्रतिभा को प्रो. नीलाभ से जो रागात्मक कुंठा मिली है उसके उदात्तीकरण का प्रयास तो उसने किया है पर उसमें वह सफल नहीं हो पायी । उसकी प्रकृति वास्तव मे उदात्तीकरण के लिए उपयुक्त नहीं हैं । प्रतिभा अपनी कुंठाओं की क्षतिपूर्ति के लिए कोई आलम्बन खोजना चाहती है । ऐसा करने से उसका विरक्ति परक रुप सहायता देता है, जिस कारण प्रो. नीलाभ की तरह प्रतिभा में आकर्षण और आसक्ति की सुगंध निर्माण हो जाती है । इसलिए वह सभी भ्रमरों को अपने चारों ओर मँडराने के लिए विवश कर देती है । लेकिन आत्मीकरण द्वारा आरोपित बौध्दिकता उसे इस रागात्मक क्षतिपूर्ति के लिए स्वीकार नहीं करने देती और छल-बल का सहारा लेकर उसे दोहरा जीवन जीने के लिए मजबूर कर देती है । फिर भी प्रतिभा के अवचेतन मन सें अपनी रागात्मक कुंठा की क्षतिपूर्ति के लिए उपयुक्त आलम्बन की खोज है । किसी भी नये पुरुष की चरचा सुनती है तो उसे मिलने के लिए तडप उठती है । उसमें यह मृगतृष्णा वशीभूत हो जाती है । इसलिए वह अपने से भिन्न और छोटे-बडें में भी दिलचस्पी लेने लगती हैं । नीलिमा से 'इंडिपेंडेन्ट क्रिकेट क्लब ' के कप्तान मि. जगन के बारे में सुनकर उसे मिलने के लिए उत्सुक होकर कहती है - " बुलाओ तो देखें जरा तुम्हारे क्रिक्रेटर को । इसी तरह हमारा भी क्रिक्रेट के साथ थोडा बहुत परिचय हो जायगा ।"[9] इस प्रकार की प्रतिभा है । जगनसे भेंट होने पर वह उसमे सिर्फ रुचि ही नहीं लेती तो उसे भी अपने में रुचि लेने के लिए अवसर देती है। वास्तव में उसे खेल में कुछ भी दिलचस्पी नही है लेकिन जगन कहता है तो उसके हाँ में हाँ मिलाती हैं । उसे जगन कनाट प्लेस चलकर कॉफी पीने के लिए कहता है तो वह हँसते-हँसते स्वीकार कर लेती है और साथ में प्रो. ज्ञानचंद को भी लेती हैं । उसके इस बर्ताव से ऐसा लगता है कि वह एक के लिए प्रोत्साहन देती तो दूसरे से घृणा और इर्ष्या करती हैं । क्योंकि यही काफी पीने का प्रस्ताव जगन के पहले प्रो. ज्ञान ने किया था लेकिन उस समय उसने अस्वीकार कर लिया था । इसके पीछे प्रतिभा का यह मकसद था

---

9) अश्क भँवर पृ. संख्या 67

कि जगन की वाह करके प्रा. ज्ञान को ईर्ष्या की अग्नि में जलाना । शापिंग के समय भी जगन के साथ ही बाते करती है प्रो. ज्ञान उसके संग है यह भी उसे बिलकुल पत्ता नहीं होता । इससे साफ जाहिर होता है कि कोई भी नया आदमी उसे मिलता है तो वह उसमें अपनी रागात्मक कुंठाओं की क्षतिपूर्ति के लिए आलम्बन खोजती है ।

प्रतिभा जगन के जितने नजदीक जाती है उतनी ही उसके दिमागी खोखलेपन से उकता जाती है । लेकिन जगन का शारीरिक सौंदर्य उसे बुरी तरह से झकझोर देता है । इसलिए उसकी छोटी बहन जब भवें ठीक करने के लिए उसके पास आती है तब वह जगन के ही खयालों में खोई हैं इस कारण उसकी भवें ठीक करने के बजाय बिगाड देती हैं । दूसरी बात यह भी है कि प्रतिमा के प्रति उसमें आंतरिक प्रतिशोध की भावना भी दिखाई देती है । दिवास्वप्न देखनेवाले अगर अपना भला न हो तो दसरों का भी भला देखने के लिए तैयार नहीं होते उसी तरह ही प्रतिभा है । प्रतिभा के यह कहना में इस मनोवैज्ञानिक बात की पुष्टि हो जाती है कि - " दोनों सुंदर और स्वस्थ है, लेकिन दिमाग से बिलकुल कोरे ।[10] अगर जगन में सुंदरता के साथ बौध्दिकता होती तो उसकी वीरान जिंदगी में बहार आ जाती लेकिन प्रतिभा की दृष्टि मे सिर्फ शरीर से जगन सुंदर है उसमें बौध्दिकता नहीं । उसकी देखने की दृष्टि ही निराशाजनक है, इसलिए उसे किसी में भी संपूर्णतः होते हुऐ भी दिखाई नहीं देती । बौध्दिकता की दृष्टि से प्रो. ज्ञान पसंत आते है तब वह उनमें शारीरिक सुंदरता ढूँढते हुऐ कहती है - " भगवान ने क्यो किसी को संपूर्ण नहीं बनाया । कितना सुंदर और सुडौल है यह जगन, लेकिन दिमाग से कितना कोरा । और ज्ञान ... कितने योग्य पर कितने दुबले - पतले । "[11] निराशावादी और बुध्दिवादी आदमी कभी संतुष्ट नही होता वह अच्छे और भले में कुछ न कुछ कुचड़ निकालता ही है प्रतिभा में यह बात स्पष्टता से दिखाई देती है । प्रतिभा के इस प्रवृत्ती पर हरदत्त मौके - बेमौके चोट भी करता है, कि

---

10) उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ.सं. 86

11) वही " " 83

- " बुध्दिवादी हर चीज से बेजार रहता हैं , हर चीज में दोष निकालता है । " लेकिन प्रतिभा पर इसका कुछ भी असर नहीं होता है ।

प्रतिभा एक रोमान - पसंद लडकी है । रोमान पसंद आदमी जीवन की दैनिकता और भाग-दौड से डरता है । जो वस्तु रोमान पसंद के लिए सहज स्वाभाविकता से मिलती है उसका वह स्वाद नहीं लेता जो उसे प्राप्त नहीं होता उसके पीछे ही भागता है । उसके लिऐ जो मिलता नहीं उसमें कुछ अप्रतिम, अतिसुंदर और संपूर्ण है ऐसा उसे लगता है लेकिन वास्तव में न पाने के कारण ही उसे ऐसा लगता है । और वह आदमी शत-शत आत्मवंचना का शिकार बन जाता है । मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो रोमान-पसंद आदमी और आत्मवंचना का शिकार बना हुआ आदमी अपने-आपसे ही ज्यादा पसंद करता है । प्रतिभा में भी यह सब गुण मौजूद है । प्रतिभा अपने जीवन और जीवन की दैनिकता से भागती है । इसलिए हरदत उसे कहता है - " यह जीवन और इस जीवन का सारा कोलाहल इसी साधारता पर टिका है । तुम इससे सदा दूर भागती हो, लेकिन जीवन की गति तो इसी के दम से है ।"[12] इतना कहनेपर भी प्रतिभा उस ओर ध्यान नही देती है क्योंकि वह बौध्दिकता का खोल चढ़ाकर बैठी हैं । जो सहजता सें उसे जगन, प्रो. ज्ञान, निर्मल और हरदत्त मिलते है तो भी उन्हे वह पसंद नही करती तो प्रो. निलाभ जो कभी प्राप्त नहीं हो सकते उनके पीछे ही लगी रहती हैं । वास्तविकता तब मालूम हो जाती है कि नीलिमा से वह बातचीत में कहती है कि - " मेरे दिमाग के किसी कोने में आजाद और कल्चर्ड जिंदगी का कुछ ऐसा सुंदर, संजीव और पवित्र चित्र अंकित है कि मैं अब दूसरी से शादी करके उसे भ्रष्ट करना नहीं चाहती । मेरा बस चले तो मैं कहीं एक किनारे बैठ कर अपनी उसी सुंदर और पवित्र दुनिया के सुख - सपने में आपना सारा जीवन बिता दूँ ।.. सो मैं सब से मिलती हूँ लेकिन कमल के पत्ते की तरह पानी में रहकर भी उससे ऊपर ।"[13]

---

12) उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ.सं.107

13) वही " " 61

प्रतिभा के इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि वह दूसरों से नहीं तो दुनिया में सब से ज्यादा खुद से ही प्यार करती है ।

प्रतिभा को जीवन में जो असंतुष्टि तथा असफलताएँ मिली हैं उनसे उत्पन्न कुंठा का उचित संयोजन नहीं हो सका है, इसलिए वह यंत्रणाप्रिय हो गयी है । जहाँ तक प्रतिभा की यंत्रणाप्रियता का सवाल है, वह दूसरों को चोट ही पहुँचाती हैं । कोई भी यंत्रणाप्रिय व्यक्ति दूसरों को दु:ख देकर, चोट पहुँचाकर ही सुख का अनुभव करता हैं । दूसरों को जलाने में उन्हें खुशी होती हैं । सगे-संबंधियों को भी वे निराश करने, अपमानित करने से नहीं छोडते । ऐसा करने से यंत्रणाप्रिय व्यक्ति के अहंम की तुष्टि हो जाती है । इसलिए प्रतिभा अपनी सगीं बहन प्रतिमा को भी इस प्रवृत्ति से नहीं छोडती बल्कि उसके प्रेमी जगन को अपने चारों ओर मँडलाने के लिए विवश कर वह उसकी ईर्ष्या का आनंद उठाती है । इसलिए प्रतिभा के इस प्रवृत्ति पर प्रतिमा कहती है - " जिस किसी से भी मिलती है, ' वही उनके गुण गाने लगता है, उसे मजबूर कर देती हैं कि वह उन्हीं के आस-पास मँडलाये । और वे पागल, समझते है, वे उन्हे पसंद करती है, उनसे प्रेम करती है, हलांकि वे उनसे खेलती हैं - जैसे बिल्ली चूहे से ।"[14] इसमें संदेह नहीं कि प्रतिभा में यह प्रवृत्ती जड़ जमा चुकी है । इसलिए दूसरों को जान-बुझकर निराश करने, अपमानित करने और जलाने में उसे आनंद मिलता है । प्रतिभा इस फन में माहिर हैं । नीलिमा को भी वह जगन के गैर जिम्मेदारी मे अपमानित करने से नहीं छोडती । प्रतिभा स्त्रियों के प्रति ही निर्ममता का व्यवहार नहीं करती तो पुरुषों को भी समय-समय पर चोट करती हैं । जगन की उपस्थिति में प्रो. ज्ञानचंद को उपेक्षित करती है । निर्मल की उपस्थिति में जगन को उपेक्षित करती है । प्रतिभा इसलिए कभी कसी की प्रशंसा करती है, तो किसी की आलोचना करती है । किसी की वह हँसी उड़ाती हैं, तो कभी किसी को हँसी करने का अवसर देकर

---

14) अश्क भँवर पृ.सं. 95

मजबूर कर देती है । यह देखकर उसके अहम् की तुष्टि हो जाती है कि अपनी एक मुस्कान या कटाक्ष पर इतने लोगोंको पागल बना सकती है ।

असल में प्रतिभा अपने परवानों को अत्यंत तुच्छ समझती है । कई-बार उसकी मुस्कानों के झीने पर्दे में से नफरत साफ झलकती है । लेकिन परवानों को कृपा-दृष्टि प्राप्त करने के पीछे उसकी मुस्कान ही दिखाई देती है, तेवर नहीं । प्रतिभा के इस प्रवृत्ति से हरदत्त वाकिफ है । इसलिए प्रतिभा की हर समय वह पोल-खोलता दिखाई देता है । प्रतिभा जब जगन से उकता जाती है तब हरदत्त अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता हुआ कहता है - " मैं तुम्हारे स्वभाव के हर उतार - चढ़ाव से वाकिफ हूँ ।... यह कोई नया अस्त्र नहीं है तुम्हारा, तुम एक तीर से तीन शिकार करना चाहती हो ।"[15] यंत्रणाप्रियता के कारण प्रतिभा को उसका कुछ भी नहीं लगता । नीलिमा भी समय-समय पर उसकी बौध्दिकता पर चोट करती है - " जो तुम से बौध्दिक मैत्री रख सके । (व्यंग से) यह बौध्दिक मैत्री भी खूब ढोंग है तुम्हारा । जब से ज्ञान साहब युनिवर्सिटी में आये हैं अथवा यों कह लो की पड़ोस में आये है, तुम तो बस घर ही की हो कर रह गयी हो ।"[16]

प्रतिभा की इन तमाम चेष्टाओं के पीछे उसकी रागात्मक असफलता से उत्पन्न हीन-भावना ही है । इसीलिए वह अपनी बौध्दिकता तथा सुंदरता को चमकाने के लिए तरह-तरह के प्रयास करती है । कभी वह बडी तडकीली-भडकीली वेशभूषा करती है तो कभी एकदम सादी और सुफियाना । कभी दार्शनिकों की तरह गंभीर हो जाती है तो कभी बच्चों की तरह चहक उठती है । साधारणता के प्रति बार-बार अरुचि प्रकट करना उसके हीनभाव का घोतक है । " परिणामस्वरुप आत्मवंचना के रेगिस्तान में भटकती उसकी सौंदर्य-चेतना बनाम बुध्दि चेतना उसके व्यक्तित्व को प्रतिक्षण प्रताडित करती है और अतृप्त भी, प्यासी हीनग्रथियों से ग्रसित होकर कुंठित हो जाती है । "[17] हीन-भाव से ग्रसित

---

15) अश्क भँवर पृ.सं. 87

16) वही " पृ.सं. 65

17) डा. वीणा गौतम- आधुनिक नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना- पृ.सं. 200

व्यक्ति कभी अपने आप से बहुत बडा बुध्दिवादी तो कभी अत्यंत तुच्छ समझता है । प्रतिभा में भी हीनभाव आद्योपान्त वर्तमान हैं । वास्तव में कुछ दमित वासनाएँ ही अव्यक्त रूप में उसके माथे पर असमय ही ऐसी छाप छोड देती हैं, जो उसे बौध्दिक रुप से प्रौढ और कुछ अधिक आकर्षक बना जाती है ।

लेखक ने प्रतिभा की मनःस्थिति पर गीतों के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया है ।

" यह सावन का घन आया
क्या, नया सँदिसा लाया
सब सखियाँ नाचें-गायें,
मिल-जुल सावनी मनायें,
साजन,
ओ साजन ।
दिल बैठ-बैठ घबराया । "[18]

सब ओर मन को मोहित करनेवाला सावन आ गया हैं । प्रतिभा के मन में भी सावन-भादों की तरह प्यार की धाराएँ बरस रही है । प्रतिभा के लिए वह एक-एक नया सँदिसा (प्यार का निर्मल, जगन आदि का) लेकर आ रहा हैं । सब प्रतिभा की सखियाँ अपने-अपने प्रिया को याद करते हुए आनंद से नाच-गा रही हैं । सभी सहेलियाँ मिल-जुलकर सॉवन मना रही हैं । लेकिन प्रतिभा इस सावन के मनभावन मास में अपने साजन को बेसब्री से ढूँढ रही हैं । प्रतिभा अपने कल्पित को मानो कहना चाहती है कि- अब तो आओ साजन, तुम्हारी राह देखते-देखते हमारा जिया घबरा गया हैं । प्रतिभा अभी भी साजन की तलाश में हैं । यही गीतों से साबित हो जाता हैं । प्रतिभा के अंतःस्तल की मार्मिक अभिव्यक्ति इन

---

18) अश्क भँवर पृ.सं. 68

गीतों के माध्यम से लेखक ने बीच-बीच में कर दी हैं ।

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य हैं कि मानव मन हमेशा द्विविधा में फँसा होता हैं । एकाध काम के लिए जितने उत्साह से हम जुट जाते हैं उतने ही तेजी से हमारे मन पर उसकी प्रतिक्रिया भी प्रारंभ हो जाती हैं । जिस प्रकार ' लहरों के राजहंस ' का ' नंद ' त्याग और भोग, भक्ति या मुक्ति, प्रेम या वैराग्य इस द्विविधा में फँस गया था । इसी तरह हमारा मन भी द्विविधा में फँस जाता हैं । इस उलझन में फँसकर हम कुछ भी निर्णय लेने में असमर्थ बन जाते हैं और आदमी आत्मवंचना का शिकार बन जाता हैं । प्रतिभा भी इसी द्विविधा में फँस गयी हैं । वह कभी बौध्दिकता का मार्ग अपनाती हैं और साधारणता से नफरत करती हैं । तो कभी बौध्दिकता से उकता जाती हैं और साधारणता की ओर भागती हैं । प्रतिभा का मन बौध्दिकता और साधारणता के झूले में झूल रहा हैं । अपने इसी मनस्थिति का विवेचन वह नीलिमा से करती हैं --- " न जाने मन कभी-कभी कैसा हो जाता हैं । चाहती हूँ अपनी इस सारी बौध्दिकता को उठाकर एक ओर रख दूँ और साधारण लोगों की तरह हँस-खेल सकूँ । पर दूसरे ही क्षण प्रतिक्रिया आरंभ हो जाती हैं । " [19] इस से साफ जाहिर होता हैं कि प्रतिभा इन दोनों के बीच झूलते हुए आत्मवंचना का शिकार बन गयी हैं । वह कभी बौध्दिकता का नकाब ओढती है लेकिन वहाँ पर उसका मन नहीं लगता और वह साधारणता की ओर से भागती हैं पर साधारणता में उसका मन नहीं लगता तब उसमें प्रतिक्रिया प्रारंभ हो जाती हैं इसीप्रकार वह दोनों के बीच ही चक्कर काटती नजर आती हैं । वह कभी चाँद को खिलौने के रुप में चाहनेवाली बच्ची बन जाना चाहती हैं तो कभी महान बुध्दिवादिनी । उसके अंर्तमन के बातों की झलक उसके संभाषणों में मिलती है । प्रो. ज्ञान के साथ बातें करते हुए वह कहती है । --- " आदमी ज्यों-ज्यों बडा होता है, उसके अरमान पीछे की ओर भागते हैं । मैं एक बार फिर बच्ची बन जाना चाहती हूँ । "

---

19) अश्क भँवर पृ.सं. 67

प्रतिभा की मन:स्थिति का तो और भी निखर रुप तब दिखाई देता है जब हरदत्त उसे बच्ची कहता है । एक ही क्षण में प्रतिभा बच्चों की तरह अपने आप बुदबुदाती हैं और दूसरे ही क्षण प्रतिक्रिया प्रारंभ हो जाने पर बेदर्दी से मुँह छिपाकर सिसकने लगती हैं । --- " हरेक आदमी अपनी खौल के अन्दर महज एक बच्चा हैं । क्या अपने खौल के भीतर मैं भी सिर्फ एक बच्ची हूँ- बच्ची - जो चाँदको चाहती हैं और खिलौनो से जिसकी तसल्ली नहीं होती । (फिर दीर्घ निश्वास लेती हैं) लेकिन चाँद बहुत ऊँचा है --- बहुत दूर है --- नीलाभ -- नीलाभ -- उफ् । "[20]

प्रो. ज्ञानचन्द :

प्रो. ज्ञान ने प्रो. नीलाभ के लगभग सभी गुणों को आरोपित कर रखा हैं । प्रतिभा इसी कारण बुध्दिवादी प्रो. ज्ञान को चाहती है । प्रेम करनेवाला हर एक आदमी अपनी एक खासियत से प्रेम हासिल करने का प्रयास करता हैं । जगन अपने खेल के जरिए से अपना प्रभाव प्रतिभा पर डालने का प्रयास करता हैं । प्रो. ज्ञान भी अपनी बौध्दिक चकाचौंध से प्रतिभा को प्रभावित करना चाहता हैं । प्रतिभा को फ्राईड आदि के विचारों के उदाहरण दे कर अपनी बौध्दिकता का परिचय देता हैं । पवित्र प्रेम और जीवन की निस्सारता सिध्द करते हुए फ्राईड के मत को विस्तार से उपस्थित करते हैं --- " फ्राईड कहता हैं -- पवित्र प्रेम महज कपोल -कल्पना हैं । हर प्रेमी अपने हृदय की किसी गहन गुफा में यौन भावना को छिपाये होता हैं - लेकिन मेरा खयाल हैं कि स्थायी प्रेम उतना शारीरिक नहीं होता जितना आध्यात्मिक । ----- आदमी अपने प्रेमी के साथ अपनी यौन-भावना को तृप्त नहीं कर पाता और जिंदगी भर उस अतृप्ति की आग में जलता रहता हैं । "[21] इसप्रकार प्रो. ज्ञान प्रतिभा पर बुध्दि के द्वारा प्रभाव डालना चाहते हैं ।

---

20) अश्क भँवर पृ.स. 112

21) वही " पृ.सं. 71

प्रो. ज्ञान जीवन की दैनिकता तथा साधारणता के प्रति अरुचि प्रकट करते हैं। सस्ती फिल्मों का नाम सुनते ही वे नाक-भौं सिकोड लेते है और किसी दावत या पार्टी में शामिल होने की कल्पना सेही घबरा जाते है । वे पार्टियों में जाकर अक्सर ऊब जाते है क्योंकि औरतें अपनी कुरुपता को छिपाने के लिए साज--शृंगार करती है और मर्द chivalrous है यह दिखाना चाहते हैं । इसलिए प्रो. ज्ञान साहब को वही खोखले शिष्टाचार, भोंडे मजाक और वही भद्दे फॅशन, बेरस और उक्ता देनेवाले लगते है । प्रतिभा उनके इसी रुप से प्रभावित हो जाती है क्योंकि इसके पीछे यह कारण है कि प्रतिभा को भी साधारणता पसंद नहीं हैं । प्रो. ज्ञान ने भी प्रो. नीलाभ से शिक्षा पायी है और साथ ही वे दर्शनशास्त्र के अध्यापक है यही बातें प्रतिभा को उनकी ओर खिंचती हैं । प्रतिभा के लिए उनके (प्रो.ज्ञान के) दृष्टिकोण अलग लगते है और साथ ही वे ' इन्टलैक्युअल ' हैं । इसमें मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि समान स्वभाववाले समान रुचियाँ रखनेवाले आदमी ही आपसमें मित्रता रख सकते है या एक - दूसरे के साथ प्यारकरते हैं । प्रो. ज्ञान और प्रतिभा में भी ऐसी ही कुछ समान विशेषताएँ हैं जो एक - दूसरे के लिए नजदीक ले आती हैं । प्रो. ज्ञानसाधारणता से भागते है प्रतिभा में भी यह विशेषता हैं । किसी के स्वभाव का आरोपण, आत्मवंचना का शिकार, खुद को बुध्दिवादी समझना यह विशेषताएँ दोनों मेंभी दिखाई देती हैं । इसलिए वे एक - दूसरे से प्रभावित है और जीवनसाथी बनाने के सपने भी देखते है ।

प्रो.ज्ञान प्रतिभा से प्यार तो करते है, लेकिन प्रकट करने में झिझकते हैं । अध्ययन करते समय उनका ध्यान प्रतिभा की ओर ही लगा रहता है इसलिए कभी - कभी लिखना पढ़ना बीच में ही छोडकर वे प्रतिभा के पास चले आते हैं । प्रतिभापर प्रेम करने के लिए अन्य ढंग का प्रयोग करते है लेकिन उसका कुछ उपयोग नहीं होता । फ्रायड के प्रेम विषयक विचारों को प्रकट करते हुए वे अपने प्रेम की माँग करना चाहते है लेकिन प्रतिभा एक चतुर युवती होने के कारण उनका कुछ भी बस नहीं चलता हैं । प्रतिभा उनके प्रेम कि चिंनगारी को सुलगाकर रखती है उसे ज्वाला नहीं बनने देती ।

प्रो. ज्ञान भी आत्मवंचना का शिकार बन गये हैं । उन्होंने भी प्रो. नीलाभ के सभी गुणों को आरोपित कर लिया हैं । प्रो. नीलाभ दर्शनशास्त्र के अध्यापक हैं । जीवन से वे विरक्त हो गये हैं । अध्ययनऔर अध्यापन में अपने समय को समर्पित किया है इसीतरह प्रो. ज्ञान ने भी साधारणता और जीवन की निस्सारता से मुँह मोड लिया हैं । अध्ययनऔर अध्यापन का कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन अभी - तक मन द्विविधा में फँसा हुआ है । सूक्ष्मता से देखने पर हमें स्पष्ट दिखाई देता है कि उन्होंने अपने गुरु के पैरोंपर चलना सीख लिया हैं ।

प्रो.ज्ञान बाहर से जितने गंभीर दिखाई देते है उतने ही वे अंदर से भावनावश भी हैं । प्रतिभा के सामने प्रेम प्रकट करते समय उनकी बौध्दिकता का रुप छलावा दिखाई देता है । अपनी बौध्दिकता का नकाब हटाकर वे साधारण लोगों की तरह प्रतिभा से प्रेम निवेदन करते हैं । बुध्दिवादी व्यक्ति कभी - कभी भावनाओं से भर जाते हैं और अपने आपको रोक नहीं सकते । उसीतरह ही प्रो. ज्ञान भी भावनाओं से भरकर प्रतिभा से प्रेम निवेदन करते है लेकिन बाद मे भावनाएँ झर जाने के बाद लज्जित हो जाते हैं ।

अश्क जी ने प्रो. ज्ञान को मनोवैज्ञानिक चरित्र के रुप में चित्रीत किया है । प्रो. ज्ञान के स्वभाव में आरोपण, हीनत्व ग्रंथी,आत्मवंचना आदि के दर्शन होते हैं । अश्क जी ने प्रो. ज्ञान के चरित्र को सुंदर और बहुत संजीव ढंग से अंकित किया हैं ।

ज ग न :

' अश्क ' जी ने जगन के माध्यम से आज के युवकों का चित्रण किया हैं । जगन एक इंडिपेंडेट क्रिकेट क्लब का मैनेजर हैं । उसे खेल में ज्यादा दिलचस्पी हैं । जगन को अपनी बातें कहने का मानो रोग ही हैं । जिसके सामने जाता है वहाँ अपने खेल के बारें में ही बातें करता हैं । यह भी नहीं देखता की सामनेवाला सुन रहा है या बातों से

उकता गया हैं । यह अपनी ही हाँके जाता हैं । जिस तरह एकाद कवी अपनीकविताएँ दूसरे को सुनाता हैं और अपने ही आप खुश होता जाता है लेकिन श्रोता की ओर ध्यान नहीं देता उसीतरह ही जगन भी करता हैं । किसी भी स्थिति में अपनी बात दूसरे के गले मढ़वाकर ही रहता हैं । जगन भी प्रतिभा के लिए खेल का महत्त्व बताता है लेकिन वह सुनने की स्थिति में नहीं है फिर भी जगन बकता ही जा रहा हैं ।

जगन शरीर से सुंदर हैं, लेकिन दिमाग से बिलकुल कोरा हैं । प्रतिभा पर वह अपने खेल के माध्यम से प्रभाव निर्माण करना चाहता हैं । प्रतिभा के लिए वह खेल की उपयुक्तता और शरीर के लिए लाभान्वितता का पाठ पढ़ाता हैं । प्रतिभा के साथ घनिष्ठता बढ़ाने के लिए यह मौका उसे अच्छा लगता हैं इसलिए उसकी थोडी सी दिलचस्पी पर वह उसे क्लब का सदस्य भी बना देना चाहता हैं । जगन एक नंबरका गप्पी और डिंग हाँकनेवाला है । अपने वाक्चातुर्य और खेल के माध्यम से वह प्रतिभा को हासिल करने का प्रयत्न करता हैं । प्रतिभा पर वह वशीकरण का जाल फेंकता हे लेकिन वह उसके जाल में नहीं फँसती ।

प्रतिभा की एक नजर से ही जगन उसका बिना दाम का गुलाम बन जाता हैं । प्रतिभा की मुस्कुराहट. पर वह सामान खरीदने के लिए उसके पिछे - पिछे भागता हैं । प्रतिभा के कपडे ठीक करने के लिए ले जाता हैं । बड़ी सफाई और कर्मठता का परिचय देकर दर्जी से कपडे ठीक कर ले आता हैं । उसका प्रेम बहुत ही मामुली और सस्ते ढंग का है । जरा सी चमक - दमक देख ली की हो गया पागल परवाना उसके आगे - पिछे झुलने के लिए । इसीतरह ही प्रतिभा उसे अपने आगे - पीछे झुलने के लिए मजबूर कर देती है । उसकी बातों पर वह गौर नहीं करती तो नफरत से और हँसी - मजाक में उडा देती है । इन सभी भँवरों को वह पास मँडराने के लिए विवश कर देती है ।

जगन एक माना हुआ खिलाड़ी है । उसमें खिलाडीवृत्ति आद्योपान्त दिखाई देती

है। जगन की खिलाडीवृत्ति और व्यवहारिक ज्ञान अच्छा है । प्रतिभा के सामने प्रेम - निवेदन करने पर असफल हो जाता है और अपनी प्रेमिका प्रतिमा के पास आता है तब उसके व्यवहारिकता का हमे पत्ता लगता हैं । बड़े ही सुंदर ढंग से और व्यवहारिकता से प्रतिमा को वह मनाता हैं । प्रतिमा के लिए भी संभ्रम निर्माण हो जाता है कि वास्तव में वह प्रतिभा से प्रेम करना चाहता था या हमारी शादी के लिए दीदी से सम्मति ले रहा था । इसतरह उसकी चतुराई का हमें सुंदरता से पत्ता चलता हैं ।

ह र द त्त :

इस नाटक का हरदत्त एक आम आदमी हैं । जिसने जीवन में बहुत कुछ सहा हैं और अनुभव प्राप्त किये हैं । हरदत्त कल्पना जगत में विचरण करनेवाला आदमी न होकर यथार्थवादी हैं । हरदत्त साहब की दोनों पत्नीयाँ मर चुकी हैं । इसलिए ख़ुद को वह अकेला महसूस करता हैं । इस अकेलेपन के कारण उसमें घुटन, उकताहट और निराशा भर गयी हैं । इसी घुटन और निराशा को भरने के लिए वह अपना मन मनोरंजन के साधनों में उलझाकर रखता हैं । वह स्पष्ट रुपसे कहता हैं - " सिनेमा और पिकनिकें.... । शुन्य को भरने का असफल-सा प्रयास हैं । जिंदगी से समझौता समझ लो । बेचैनी नही होती ।"[22] हरदत्त साहब अपने गम और बेंचैनी को भुलाने के लिए एक असफल-सा प्रयास सिनेमा और पिकनिक से करता हैं । दु:ख और बेचैनी कम करने के लिए वे ऐसा करते हैं लेकिन दु:ख उनका पिछा नही छोडता क्योंकि उनके मन के किसी काने में प्रतिभा को प्राप्त करने की लालसा बैठ गयी हैं । इसलिए वह समय-समय पर प्रतिभा के आगे -पीछे घूमते है ।

---

22) अश्क भँवर पृ.स. 88

हरदत्त प्रतिभा को अपनाने के लिए मनोरंजन के साधनों का सहारा लेता हैं । प्रतिभा के बेजानऔर वीरान जीवन में इस साधारणता के कारण हारे घास के तिनकें उगाना चाहता हैं । प्रतिभा को वह जीवनानुभव बताकर अपनाने का परामर्श देते हुए कहता है - " मैने काफी मुल्या चुकाकर ब्याह की कला सीखी हैं । मेरे साथ रहकर तुम्हें पूरी शान्ति मिलेगी ।" प्रतिभा और हरदत्त के जीवन में समान असमान कुछ विशेषताएँ भी भर गई हैं दोनों भी अपने - अपने सार्थियों से बिछडे हुए हैं । दोनो के जीवन में समान ही घुटन, बेचैनी, उकताहट भर गयी है । अब उन दोनों के लिए किसी के प्यार का सहारा चाहिए जो जिंदगी के वीरान रेगिस्तान में हारे घास के पत्ते लहलहाएँ । इस कारण वह प्रतिभा से कहता है कि - "हम दोनों के जीवन में उकताहट, घुटन, शुन्य एक सा अनुभव करते है । " दोनों भी इसतरह एक - दूसरे कि साहचर्य से बेचैनी, घुटन , उकताहट को कम करने का प्रयास करना चाहते है लेकिन प्रतिभा का स्वप्नदर्शी स्वभाव ऐसा न कर प्रो. नीलाभ की ओर खींचा चला जाता हैं ।

प्रतिभा के स्वभाव के हर उतार - चढ़ाव से हरदत्त वाकिब है । इसका कारण यह है कि उसके जीवन में यही उतार - चढ़ाव आ -जा रहे हैं । इसलिए वह प्रतिभा से कहता है - " तुम इस यथार्थ को नहीं समझती । मेरा सिनेमा और पिकनिकों मे मन लगाना और तुम्हारा एक के बाद दूसरे व्यक्ति को अपने साथी के रुप में परखना बेकार है - एकदम बेकार । मै सोच रहा हूँ , मुझे फिर शादी कर लेनी चाहिए । (कुछ क्षण दोनों मौन रहते हैं) और मैं तुम्हें भी यह परामर्श देना चाहता हूँ ।"[23] दोनों के जीवन में समान ही उलझन, घुटन और बेचैनी भर गयी हैं । इसी कारण ही वे दोनों एक दुसरे के नजदीक जीवन साथी बनने के लिए आते है लेकिन दूसरे ही क्षण उनमें प्रतिक्रिया आरंभ हो जाती हैं । हरदत प्रतिभा के आत्मवंचना पर, हीनत्व ग्रंथि पर घनाघोर चोट

---

23) अश्क भँवर पृ.सं. 88

करते हुए कहता है - " तुम रोमान - पसन्द भी हो और बुध्दिवादी भी । रोमान - पसन्दों की तरह तुम जीवन की दैनिकता से डरती भी हो और उस बेजारी और असंतोष को भी प्रकट करती हो जो बुध्दिवादियों का खास गुण हैं । देखो तीभा, नन्हीं - नन्हीं खुशियों से दूर न भागो । इन्ही में जिन्दगी को ढूँढो । इन्हीं मे तुम्हें शांति मिलेगी । "[24] हरदत्त प्रतिभा पर व्यंग्य का हाथियार चलाता है लेकिन उसका कुछ भी परिणाम प्रतिभा पर नहीं होता ।

प्रतिभा और हरदत्त एक-दूसरे के सफल पूरक बननेकी योग्यता रखते है । हरदत्त भी इस बात को जानता हैं और प्रतिभा भी अन्त में अनुभव करती हैं । लेकिन प्रतिभा में हीनभाव और आत्मवंचना उसे ऐसा करने से रोकते है जिसके कारण वह हरदत्त को स्वीकार नहीं कर सकती । हरदत्त में उकताहट, घुटन और बेचैनी है लेकिन स्वप्नदर्शिता नहीं हैं इसलिए वह प्रतिभा को स्वीकारने में हिचकता नही हैं । लेकिन प्रतिभा की नौंका जीवन के भँवर में फँसती ही जाती हैं ।

नि ष्क र्ष :

' भँवर ' निश्चित ही मनोवैज्ञानिक नाटक हैं । उसमें आये हुए हर पात्र में मनोवैज्ञान की झलक मिलती हैं । पात्रों का स्वभाव, उनकी रहन - सहन, देश - काल वातावरण आदि के द्वारा लेखक ने यह स्पष्ट कर दिया हैं । आज का ज्यादा शिक्षित व्यक्ति किस प्रकार आत्मवंचना का शिकार बनता जा रहा हैं । शिक्षा हमारे सामने नये मार्ग का अन्वेषण कर रही है या उसमें ही उलझाकर रख रही हैं । आज की शिक्षित स्त्री भारतीय समाज में रहकर पाश्चात्य लोगों का अनुकरण कर रही हैं । पाश्चात्य संस्कृति उसके लिए वरदान साबित हो रही हैं या शाप बनती जा रही है ? प्रतिभा जैसी सुशिक्षित

---

24) अश्क भँवर पृ.सं.108

नारी में बेचैनी, घुटन, उकताहट हीन-भाव, आत्मवंचना आदि क्यों भर रहे हैं ? इसके पहले भारतीय स्त्री में कभी ऐसे गुण नहीं दिखाई देते थे । लेकिन आज पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने के कारण भारतीय स्त्री में यह भाव उभरते हुए दिखाई दे रहे है जिसके कारण स्त्री अपना स्त्रीत्व भलती हुई नजर आ रही हैं ।

ज्यादा शिक्षित नारी खुद को ही समझने में असमर्थ हो जाती हैं । आज की आधुनिक नारी शिक्षा के इसी भँवर में फँसकर अपना जीवन नष्ट कर रही हैं । आज के शिक्षित जनों का मानसिक संतुलन कहीं खोता हुआ नजर आ रहा हैं । खुद वे आज बेगाने की तरह द्विविधा की झुले में झुल रहे हैं । जीवन में जिसतरह कहीं प्रतिभा चुक गई है उसीतरह ही आज की नारी चुकती हुई नजर आ राही हैं । आज मानव मन कुंठिओं से भरा हुआ और पग - पग पर ठोकर खाता हुआ आगे बढ़ रहा हैं ।

अश्क जी ने इस नाटक के जरिए से मानव मन में उठनेवाले भाव - भावनाओं को मूर्त रुप दिया हैं । अपने पात्रों के माध्यम से उनके अंतस्तल में बैठकर उन्होंने अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण किया हैं । " भँवर ' में मनोविज्ञान का बहुत आश्रय लिया गया है और इसलिए इसे मनोविज्ञान - प्रधान नाटक माना जाना चाहिए ।"[25] सभी लोग ' ' भँवर ' को पढ़ने के बाद यह नाट्यकृति निश्चित मनोवैज्ञानिक है ऐसा मानते हैं । इसमें मानसिक अन्तर्द्वन्द्व , हताश, घुटन, उब, बेचैनी, जीवन की निस्सारता आदि का चित्रण दिखाई देता है । " भँवर जीवन के आस - पास घटितहोने वाली यथार्थ स्थितियों एवं घटना - चक्रों के मर्म का उच्छेदन करने वाली अश्क की मनोवैज्ञानिक नाट्यकृति है ।"[26] इस तरह देखने पर हम निश्चित रुप से कह सकते है कि - ' भँवर ' एक मनोवैज्ञानिक नाटक है ।

---

25) दुष्यन्त कुमार - नाटककार अश्क पृ.स. 246

26) डा.वीणा गौतम - हिंदी नाटकों मे मध्यवर्तीय चेतना पृ.स. 198